DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
M/o-9415376545

B.A Part-I (HON'S) Paper-II

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................

Lecture-03

Date. 10-07-20.......

श्री अरबिन्दो घोष-(1872-1950) का परिचय

श्री अरबिन्दो घोष या श्री अरविन्द एक महान योगी एवं राजनीतिक दार्शनिक थे। वस्तुतः श्री अरविन्द घोष भारतीय पुनर्जागरण और भारतीय राष्ट्रवाद की एक महान विभूति थे। इनका जन्म 15 अगस्त 1872 को कलकत्ता में हुआ था। उन्होंने युवा अवस्था में स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी के रूप में भाग लिया, किन्तु बाद में एक योगी बन गये और उन्होंने पांडिचेरी में एक आश्रम स्थापित किया। विद्वान रोमा रोंला ने अरविन्द को 'भारतीय दार्शनिकों का सम्राट एवं एशिया तथा यूरोप की प्रतिभा का समन्वय' कहकर पुकारा है। इसी प्रकार डॉ० फ्रेडरिक स्पाजलवर्ग ने उन्हें 'हमारे युग का पैगम्बर' कहा है।

श्री अरविन्द की रचनाओं से हमें भारत की नवीन तथा उदीयमान आत्मा का घनीभूत सार देखने को मिलता है। श्री अरविन्द प्रथम भारतीय राष्ट्रवादी थे जिन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्ति को भारत के राष्ट्रीय एवं राजनीतिक संघर्ष का उद्देश्य माना था। आध्यात्मिक राजनीति या राजनीति का आध्यात्मीकरण अरविन्द की भारतीय चिन्तन को अनुपम देन है। रामकृष्ण और विवेकानंद के वेदान्तिक समन्वय का अरविन्द पर विशेष प्रभाव पड़ा है। राजनीतिक नेता तथा लेखक के रूप में वे प्राचीन वेदान्त तथा आधुनिक यूरोपीय राजनीतिक दर्शन का समन्वय

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
B.A Part-I (HON'S) Paper-II Mo- 9415376545
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Date.10-07-20........

करना चाहते थे। उनका राजनीतिक वेदान्त उपनिषदों के विश्व स्वीकारात्मक दृष्टिकोण का पुनः प्रतिपादन मात्र नहीं है, बल्कि वह एक पराधीन राष्ट्र के राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन के पुनर्निर्माण का ठोस राजनीतिक दर्शन है।

श्री अरविन्दो की कुछ अति महत्वपूर्ण रचनाएँ →

पाण्डिचेरी आश्रम के एकान्त निवास में अरविन्द ने कुछ महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की —

1- द लाइफ डिवाइन (The Life Divine)
2- एसेज आन द गीता (Essays on the Geeta)
3- द सिन्थैसिस आफ योग (The synthesis of yoga)
4- सावित्रि (Savitri)
5- द ह्यूमन साइकल (The Human cycle)
6- द आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी (The Ideal of Human unity)

श्री अरविन्दो घोष के उपरोक्त ग्रन्थों से पता चलता है कि वे पूर्व के धार्मिक साहित्य तथा पश्चिम के तत्वशास्त्र दोनों से भलि-भाँति परिचित थे। श्री रविन्द्रनाथ ठाकुर ने "उन्हें भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का मसीहा कहा है।" वे आगे कहते है कि अरविन्दो घोष के माध्यम से भारत की वाणी समस्त विश्व में सुनी जायेगी। भारत के इस महान राजनीतिक दार्शनिक की मृत्यु पाण्डिचेरी आश्रम में 5 दिसम्बर 1950 को हुई थी। अपने पीछे अनेक शिष्यों को जन्म देकर वे आज भी भारतीय राष्ट्रवाद के लिए प्रासंगिक बने हुए है।

Scanned with CamScanner